नाम : डॉ लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

महाविद्यालय का नाम : दुर्गा महाविद्यालय रायपुर ***(छ.ग.)***

संकाय : कला

पद नाम : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

विषय : देनदारी लिपि का विकास और विशेषताएँ

दिनांक :18/07/2023

देनदारी लिपि का विकास और विशेषताएँ

भारत एक विशाल और महान देश है। भारत में अनेक जाति धर्म रीति रिवाज के मानने वाले लोग रहते हैं इस बहुसंस्कृति बहुजातियां बहुभाषी भारत में अनेक भाषाएँ और लिपियाँ हैं। लिपि भाषा का मूर्त रूप होती हैं, या तो कहें कि भाषा को अंकित करने के लिए व्यवस्थित विधि ''लिपि'' कहलाती है। देवनागरी अथवा नागरी के नामकरण के आधार के सम्बम्ध में अनेक मत प्रचलित हैं। ओझा जी के मतानुसार नागरी नाम कब से प्रसिद्ध में आया यह निश्चित नहीं परन्तु तान्त्रिक काल में नगर नाम प्रचलित था। कुछ विद्वानों के नागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग नगर ब्राहणों ने किया। इस कारण यह लिपि नागरी कहलायी। किन्तु इस मान्यता का कोई भी ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। बोद्धा के आधार पर नाग लिपि शब्द से ही नागरी लिपि शब्द बड़ा किन्तु इसके समर्थन में कोई तर्क नहीं मिलता। प्रारम्भ में नागरी लिपि का प्रयोग नगरों से ही होता था, इस कारण नगर की लिपि नागरी कहलाने लगी। यह मत तर्क संगत तो है, किन्तु प्रामाणिक नहीं। कुछ विद्वानों के अनुसार देववाणी संस्कृत के आधार पर देवनागरी शब्द आया किन्तु इससे भी नागरी शब्द को सार्थकता स्प्ष्ट नहीं होती है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार देवनागरी या नागरी नाम के कारण अनिश्चित है।

भारत में प्रस्तुत लिपि का भारम्भ आठवीं शताब्दी से हुआ है। प्रारम्भ में यह 'उत्तरी लिपि' दक्षिण भारत में वही 'नंदिनागरी' रही। इसी को नागर लिपि या देवनागरी कहते हैं। भारतीय संविधान की धारा 343 में यह निश्चित किया गया है कि राजभाषा हिन्दी की लिपि देवनागरी होगी । संविधान के अनुसार नागरी लिपि हमारी राष्ट्रीय लिपि है। पर खेद इस बात का है कि फिर भी वह पूरे राष्ट्र की–लिपि नहीं बन पायी है। जैसे भारत की प्रांचीन लिपियों में ब्राह्मी, खरोष्ठी, गृप्त, कुटिल लिपि रही है वैसे आधुनिक प्रचलित लिपियों में तमिल, तेलुगु मलयालम, उड़िया, गुरुमुखी आदि का प्रयोग सम्बन्धित राज्यों में हो रहा है।

देवनागरी लिपि का प्रयोग संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपश्रंश हिन्दी, राजस्थॉनी, महाजनी, मराठी आदि भाषा के लेखन में होता है। यह

वैज्ञानिक तथः पूर्ण लिपि है। भारत के सिन्धी, मणिपुरी तथा उदृ' के आम प्रसिद्ध लेखक तथा कविगण अपने साहित्य सृजन में इसी का प्रयोग कर चुके हैं। इतना ही नहीं पंजाबी भाषा लिखने में भी देवनागरी भाषा का प्रयोग हो रहा है। देक्षिण' भारत के ग्रन्थ भी देवनागरी में प्रकाशित हो रहे हैं। भारत के बाहर नेपाल में भी यही लिपि प्रयुक्त है। संक्षेप में नागरी लिपि का हिन्दुस्तान में सर्वाधिक प्रयोग हो रहा हैं इसीलिए वह राष्ट्र लिपि के साथ–साथ सम्पक लिपि के रूप. में भी स्वीकृ त है । राजा राममोहन राय, लोकमान्य तिलक, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा न्यायमूर्ति शारदाचरण मिश्र इसके प्रथम प्रणेता रह चुके हैं।

नागरी लिपि समर्थ, सशक्त, सप्राण राष्ट्र लिपि होने के बावजूद भी उसके सामने कुछ समस्याएँ हैं, जिसका समाधान धीरे–धीरे सम्पन्न हो रहा है।

नागरी या देवनागरी के नामकरण का आधार–देवनागरी अथवा नागरी के नामकरण के आधार के सम्बन्ध में अनेक मत प्रचलित हैं। ओझा जी के मतानुसार, नागरी नाम कब से प्रसिद्धि में आया यह निश्चित नहीं परन्तु तान्त्रिक–काल में नगर नाम प्रचलित था। भास्क्रारान्द ने एकार का त्रिकोण रूप नागर लिपि में होना बताया है। शिव की मूर्ति केवल नागरी लिपि से बन सकती है, दूसरी लिपियों से नहीं । इससे इतना तो स्पष्ट है कि देवनागरी के लिये "नागर' नाम प्रचलित था। देवनागर के मध्य लिखे जाने वाले सांकेतिक चिन्ह देवनागर के मध्य होने के कारण देवनागरी कहलाए कुछ ,दिद्वानों के नागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग नागर ब्राह्मणों ने कियां। इस कारण यह लिपि नागरी थे कहलायी, किन्तु इस मान्यता का कोई भी ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। बौद्धों के आधार पर नाग लिंपि. शब्द से ही नागरी लिपि शब्द बना, किन्तु इसकें समर्थन में कोई तर्क नहीं मिलता। प्रारम्भ–में नागरी लिपि का प्रयोग नगरों से ही होता था, इस कारण नगर की लिपि नागरी कहलाने लग़ी। यह मत 'तर्कसंगंत तो है, किन्तु प्रामाणिक नहीं । कुछ विद्वानों के अनुसार, देव वाणी संस्कृत के आधार पर

देवनागरी शब्द आया, किन्तु इससे भी नागरी शब्द की सार्थकता स्पष्ट नहीं होती है।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार, देवनागरी या नागरी नाम के कारंण अनिश्चित है। डॉ. बाबूराम सक्सेना एवं अन्य विद्वानों के मत भी इसी प्रकार के हैं। आठवीं–नवीं शताब्दी में कुटिल लिपि का – परिष्कार पाटलिपुत्र नगर के नागर पण्डितों के द्वारा किया हुआ होगा। इसी कारण उसे कुटिल लिपि ' के विपरीत सब प्रकार से सुन्दर, पूर्ण एवं लेखन के उपयुक्त समझकर जन–समाज ने नागरी शब्द से सम्मानित किया 'तब देववाणी के साम्य पर इसे देवनागरी कहा जानेललगा।

नागरी के अन्य नांम–नागरी को प्रायः देवनागरी, नागर, देवनागर, लोक 'नागरी तथा हिन्दी लिपि'भी कहा जाता है। इन नामों के अतिरिक्त नागरी की एक विशेष शैली का नाम नन्दि नागरी भी है।जिसका प्रंयोग दक्षिणी प्रान्तों में संस्कृत लिखने के लिए होता है। नागरी को लोक नामरी नाम देने का श्रेय आचार्य विनोबा भावे को है द्य उनका मत है कि आज देंवनागरी किसी जाति वर्ग, भाषा या प्रान्त विशेषःकी लिपि नहीं, अपितु वह सम्पूर्ण राष्ट्र या लॉक की जन सामान्य लिपि बन चुकी है। यह नाम उपयुक्त तो है, किन्तु नागरी एवं देवनागरी का प्रचलन प्राचीन होने से किसी अन्य नाम का लोक ' बनपाना सम्भव नहीं होता।

नागरी का उद्‌भव आठवीं–नौवीं शताब्दी के बीच कुटिल लिपि से हुआ है, जिसके प्रमाण नागरी और दक्षिणी भारत में मिलते हैं इससे स्पष्ट है कि देवनागरी जन्म के साथ उत्तर दर दक्षिण तक फैल गयी थी.। उत्तरी भारत में देवनागरी पर दसवीं शताब्दी और दक्षिणी भारत में आठवीं ., "शताब्दी के लेख उपलब्ध हैं देवनागरी के प्राचीनतम लेख सर्वप्रथम राष्ट्रकूट वंश के राजा दन्तिदुर्ग तत्पश्चांत राजा गोविन्द राज द्वितीय, राजा गोविन्द. तृतीय, तदनन्तर राजा ध्वराज अमोघवर्ष और –शिलार वंशी सामन्त पुल्लशक्ति के दान पत्रों में उपलब्ध हैं ।

गुजरात के गुर्जर वंशी राजा जयभट ने भी नागरी लिपि का प्रयोग किया था। विजय नगर के जा के दान.पत्रों में. भी इसका प्रयोग मिलता है। कन्नौज के प्रतिहार वंशी राजा महेन्द्रपाल प्रथम के दानपत्र में पह प्राप्तहोती है। ओझा जी ने लिखा है कि इसमें दसवीं शताब्दी में कुटिल लिपि की भाँति अ, आ, व, प, म, य, ष और स के सिर दो अंशों में विभकत मिलते हैं । परन्तु ग्यारहवीं शताब्दी से ये दोनों अंक मिलकर सिर की एक लकीर बन जाती हैं और प्रत्येक अक्षर का सिर लम्बा हो गया। ग्यारहवीं शताब्दी की नंगरीं लिपि वर्तमान 'नागरी से मिलदी–जुलती है और बारहवीं शताब्दी से वर्तमान नगारी बन गया है।

नागरी का आधुनिक स्वरूप–आधुनिक नागरी दसवीं शताब्दी की प्राचीन नागरी. का ही –विकसित रूप 5, जिस प्रकार संस्कृत से हिन्दी के विकास के मध्य भी गुप्त लिपि एवं कुटिल लिपि के दो मुख्य २ पान हैं।

नागरी झा वर्तमान स्वरूप क्रमिक विकास,का प्रतिफल है। यंहं अपने जन्म के साथ ही संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश क्रे अतिरिक्त आधुनिक मराठी आदि समृद्ध भाषाओं की संवाहिका रही हैं।

नागरी विश्व की सर्वाधिक पूर्ण और संतुलित लिपि. है। उसकी प्रमुख विंशेषताएँ निम्नलिखित हैं.–

(1) यह ध्वनि चिन्हों अथवा वर्णों से सम्पन्न–है ।

(2) इसकी वर्णमाला में स्वर एवं व्यंजन है।

(2) इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिये स्वतन्त्र वर्ण हैं।

(4) ब्राह्मी की उत्तराधिकारिणी होने के कारण इसका "मस्त आधुनिक भारतीय लिपियों से साम्य है।

(5) इसमें जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है और :–यह बोला जाता है वही लिखा जाता. है।

(6) इसमें कम स्थान में अधिक शब्द लिखे जा सकते हैं।

(7) इसमें प्रत्येक वर्ण का.उच्चारण अनिवार्य होता है।

(8) यह लेखन एंवं बाचन की दृष्टि सरल हैं। इसका रूप नेत्राकर्षक है।

(9) यह वैज्ञानिक पद्धति से निर्मित होने के. कारण सरलता से सीखने योग्य है।

(10) यह भारत की अन्तर्देशीयं लिपि है–तथा अन्तर्राष्ट्रीय लिपि बनाये जाने के योग्य है।

(11) इस्र दर किसी भाषा विशेष का एकाधिपत्थे नहीं है।

(12) यह अक्षरात्मक लिपि हैं और लिपि.के अद्यतन विकास की अंतिम कड़ी है।

(13) इसके प्रत्येक वर्शे को सर्वत्र उच्चारण होता है।

(14) इसमें विभिन्न स्थानीय अनुनासिक ध्वनियों के लिये अलग–अलग स्वतन्त्र वर्ण (ड, ज, ण, न, में) है।

(15) यह ध्वन्यात्मक एवं लिप्यन्तरण के अनुकूल है।

(16) इसके वर्णों में रोमन वर्णों के समान छोटे–बड़े (कैपिटल और स्माल) वर्णों की उलझन नहीं है।

(17) भारतीय साहित्यः में कुछ ऐसे रूप विकसित हुए हैं जो केवल देवनागरी में ही लिखे जा सकते हैं । उदाहरणार्थ, चित्रलेंकारों के पद्यबन्ध।

(18) देवनागरी अंकों को लेकर अनेक चमत्कारपूर्ण कविताएँ लिखी गयी हैं, जो अन्य अंकों में सम्भव नहीं हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

01. कैलाश चंद्र भाटिया – हिन्दी भाषा

विकाश और स्वरूप, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली–2001

02. प्रयोजक मूलक हिन्दी व्याकरण एवं पत्र लेखन – डॉ. बापूराव घोडूजी देसाई, विनय प्रकाशन, नागपुर।

03. भोलानाथ तिवारी – मानक हिन्दी का रूवरूप, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।

04. डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया हिन्दी भाषा साहित्य भवन प्रा0लि0

05. डॉ. माणिक गृगेश – भूमंडलीकरण, निजीकरण व हिन्दी–वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।